गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009 के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

F.No.PRO/29

01st February 2024

Greetings from Central University of Gujarat

भारतीय ज्ञान परंपरा विषय नहीं जीवन जीने का मार्ग

- "भारतीय ज्ञान परंपराएँ: संचार और महत्व" विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में वक्ताओं ने प्रस्तुत किया संबोधन

गांधीनगर। हमारे पास इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट है लेकिन वर्तमान समय इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन मैनेजमेंट का है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। हमें हमारी गौरवमयी परंपरा पर गर्व करना चाहिए। ये कहना है, गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. भाग्येश झा का। गुरुवार को गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य, संस्कृति एवं व्यक्तित्व अध्ययन केन्द्र की ओर से आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को बतौर विशिष्ट अतिथि संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भगवद्गीता में एटीट्यूड, स्किल और नॉलेज को क्रमश: भक्ति, ज्ञान और कर्म के रूप में प्रतिपादित किया गया है जो जीवन को नई दिशा देते है। भारतीय ज्ञान परंपरा के कर्त्तव्यमूलक समाज में आचार्यों का महत्व बताया गया है, जो हमारी मूल संस्कृति से जोड़ते है। हमारी परंपरा में शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण धनुर्धर अर्जून है, जिन्हें आर्ट ऑफ वार के साथ अन्य कलाओं में भी दक्षता थी। अखंड भारत सांस्कृति गणतंत्र रहा है। हमारे पांच पहलू भ्रमण, भोजन, पोशाक, भाषा और भजन हमें हमारी संस्कृति की पहचान कराते है। उन्होंने एथिक्स, एनर्जी, एक्सीलेंस,एजुकेशन और एन्वॉयरन्मेंट को पांच ई की संज्ञा देते हुए वैश्विक समस्या बताया जिसका समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा से ही संभव है। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुई गुजरात विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता ने कहा कि भारतीय ज्ञान ने ही हमारे समाज का संरक्षण किया है, इससे अनवरत चलने वाली सभ्यता का संरक्षण संभव हो पाया। भारतीय ज्ञान परंपरा 'स्व' से खुद के परिचय की यात्रा है। प्रत्येक विषय आईकेएस(इंडियन नॉलेज सिस्टम) से जुड़ा हुआ है। हर विषय के शुरूआती अध्ययन में ही भारतीय ज्ञान परंपरा का हिस्सा जोड़ना जरूरी है। हमें भारतीय ज्ञान परंपरा की वैद्यता के लिए पश्चिम के देशों से लेने की जरूरत नहीं है। हमारे ज्ञान का स्त्रोत ही हमारे अस्तित्व का प्रमाण है। इस अवसर पर विशेष उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए सामाजिक चिंतक अश्विनी शर्मा ने कहा कि भारत मानव जाति का उद्गम स्थल है। कुछ वर्ष पूर्व तक राम मंदिर का निर्माण भी एक कल्पना

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

मात्र ही था, लेकिन अब राम मंदिर का प्रतीक चिन्ह मिलना देश में हो रहे बदलावों का बड़ा परिणाम है। राम मंदिर एक राष्ट्र मंदिर के तौर पर विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त करेगा। कार्यक्रम में आए अतिथि सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुकांत कुमार सेनापति ने कहा कि भारतभूमि ऋषियों के तप का प्रताप है, जो भारतीयों का पाथेय है। इसी पाथेय को लेकर भारत विश्व गुरु बना है। कार्यक्रम में मुख्य भाषण प्रस्तुत करते हुए शिक्षा मंत्रालय के आईकेएस डिवीजन के राष्ट्रीय समन्वयक प्रो. गंटी एस मूर्ति ने भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक परिदृश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि सभी परंपराओं में प्रणाली एक समान है लेकिन दृष्टि अलग-अलग होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का दृष्टिकोण व्यापक और वृहद है जिसका मूल उद्देश्य जनकल्याण है। इसी भाव से भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक कल्याण के लिए काम कर रही है।

अध्यात्म प्रधान संस्कृति का द्योतक भारत

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमा शंकर दूबे ने कहा कि भारत राष्ट्र की संस्कृति अध्यात्म प्रधान है, जिसमें भौतिकता के साथ अध्यात्मिकता का अद्भूत समन्वय है। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति में जहां गुरु का दायित्व सिर्फ ज्ञान देने तक ही सीमित है, वहीं भारतीय संस्कृति में छात्र के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास भी हो इसे सुनिश्चित करना है। उन्होंने मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर जोर देते हुए कहा कि भारतीय दृष्टि हमें मनुष्य के शरीर के तौर पर ही नहीं देखती अपितु एकात्म भाव के रूप में देखती है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से की गई। इस दौरान कार्यक्रम के संयोजक प्रो. अतनु महापात्र ने बताया कि सम्मेलन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्ध ज्ञान को सतत् प्रवाहित करना है, ताकि हमारी वृहद और सम्पन्न सभ्यता पर गौरवान्वित महसूस किया जा सके। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एच बी पटेल ने आगंतुक सभी अतिथियों का स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में देश के विभिन्न अंचलों से 300 से अधिक शोधार्थी, शिक्षक और विद्वतजन शामिल हुए। प्रो. महापात्र की माने तो इस तीन दिवसीय सम्मेलन में कुल 24 तकनीकी और 4 पूर्ण सत्र होंगे।

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009 के तहत स्थापित)
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT
(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

Indian Knowledge Tradition is not just a subject but a way of life

- Speakers presented addresses during the inaugural session of a three-day international conference on "Indian Knowledge Traditions: Continuity and Significance"

Gandhinagar. Despite having the Indian Institute of Management, there is a need for an Institute of Indian Management. Indian knowledge traditions are a rich heritage, and we should take pride in our glorious tradition, said Dr. Bhagyesh Jha, the President of the Gujarat Literary Academy. Addressing the inaugural session of the three-day international conference organized by the Centre for Health, Culture, and Personality Development at Central University of Gujarat on Thursday, he emphasized that the Bhagavad Gita advocates Attitude, Skill, and Knowledge as devotion, wisdom, and action, respectively, providing a new direction in life.

Dr. Jha highlighted the importance of teachers in the duty-centric society of Indian knowledge traditions, connecting them to our ancient culture. The best example of education in our tradition is Arjuna, who excelled not only in the art of war but also in other fields. India has remained a diverse cultural democracy. Our five facets of travel, food, clothing, language, and devotion define our cultural identity.

Addressing the gathering, Prof. Neerja Arun Gupta, Vice-Chancellor of Gujarat University, stated that Indian knowledge has preserved our society, ensuring the conservation of a civilization that continuously evolves. Indian knowledge tradition is a journey of self-introduction starting with 'Swa,' and it is essential to integrate it into the initial studies of every subject. There is no need for us to seek validation from Western countries for the validity of our knowledge. Our knowledge source is the proof of our existence.

While presenting a special address, social thinker Ashwini Sharma stated that India is the birthplace of humanity. A few years ago, the construction of the Ram Temple was just a mere imagination, but now, it symbolizes the changes happening in the country. The Ram Temple will guide India as a developed nation. Speaking at the program, Prof. Sukant Kumar Senapati, Vice-Chancellor of Somnath Sanskrit

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

University, said that India is the land of the penance of sages, which is the path of Indians. With this path, India has become a world guru.

Delivering the keynote address at the program, Prof. Ganti S. Murthy of the IKS Division of the Ministry of Education discussed the global perspective of Indian knowledge traditions. He stated that while systems in all traditions are similar, the perspective differs. The broad and rich viewpoint of Indian knowledge tradition aims at global well-being.

Spirituality-led culture, the torchbearer of India

While presiding over the program, Prof. Rama Shanker Dubey, Vice-Chancellor of Central University of Gujarat, emphasized that India's culture is spirituality-led, featuring a remarkable harmony between physicality and spirituality. He compared it with Western culture, where the responsibility of a teacher is limited to providing knowledge, whereas Indian culture demands the holistic development of a student in body, mind, intellect, and soul. He stressed that the Indian perspective doesn't merely see a human as a physical entity but perceives them as a unity in diversity. Deep Prajvalan marked the beginning of the program, and the convenor of the program, Prof. Atanu Mohapatra, mentioned that the purpose of this conference is to continuously disseminate the enriched knowledge of Indian knowledge traditions, allowing us to feel proud of our vast and affluent civilization. Prof. H. B. Patel, the registrar of the University, welcomed all the guests in his welcome address. It is noteworthy that the conference witnessed the participation of over 300 researchers, educators, and scholars from various regions of the country. According to Prof. Mohapatra, there will be a total of 24 technical and 4 plenary sessions during this three-day conference.

ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા એ વિષય નથી પણ જીવન જીવવાની પદ્ધતિ છે

- "ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાઓ: સંચાર અને મહત્વ" પર ત્રણ દિવસીય આંતરરાષ્ટ્રીય પરિષદના ઉદ્ઘાટન સત્રમાં વક્તાઓએ વિચારો રજૂ કર્યા.

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

ગાંધીનગર.આપણી પાસે ઈન્ડિયન ઈન્સ્ટીટ્યુટ ઓફ મેનેજમેન્ટ છે પણ વર્તમાન સમય ઈન્ડિયન ઈન્સ્ટીટ્યુટ ઓફ મેનેજમેન્ટનો છે. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા સમૃદ્ધ વારસો છે. આપણને આપણી ભવ્ય પરંપરા પર ગર્વ હોવો જોઈએ. તેવું ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમીના પ્રમુખ ડો.ભાગ્યેશ ઝાનું કહેવું છે. ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના સેન્ટર ફોર હેલ્થ, કલ્ચર એન્ડ પર્સનાલિટી સ્ટડીઝ દ્વારા ગુરુવારે આયોજિત ત્રિ-દિવસીય આંતરરાષ્ટ્રીય પરિષદના ઉદ્ઘાટન સત્રને વિશેષ અતિથિ તરીકે સંબોધતા તેમણે જણાવ્યું હતું કે ભગવદ્ ગીતામાં વલણ, કૌશલ્ય અને જ્ઞાનને ભક્તિ તરીકે વર્ણવવામાં આવ્યું છે. અનુક્રમે જ્ઞાન અને કર્મ. તેને એવા સ્વરૂપમાં રજૂ કરવામાં આવ્યું છે જે જીવનને નવી દિશા આપે છે. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાના કર્તવ્યલક્ષી સમાજમાં ગુરુનું મહત્વ સમજાવવામાં આવ્યું છે, જે આપણને આપણી મૂળ સંસ્કૃતિ સાથે જોડે છે. આપણી પરંપરામાં શિક્ષણનું શ્રેષ્ઠ ઉદાહરણ તીરંદાજ અર્જુન છે, જેને યુદ્ધની કળાની સાથે અન્ય કળાઓમાં પણ નિપુણતા હતી. અવિભાજિત ભારત એક સાંસ્કૃતિક પ્રજાસત્તાક રહ્યું છે. આપણા પાંચ પાસાઓ – પ્રવાસ, ખોરાક, પહેરવેશ, ભાષા અને ગીતો – આપણને આપણી સંસ્કૃતિ સાથે ઓળખાવે છે. તેમણે એથિક્સ, એનર્જી, એક્સેલન્સ, એજ્યુકેશન અને એન્વાયર્નમેન્ટને પાંચ E' ગણાવ્યા અને કહ્યું કે આ એક વૈશ્વિક સમસ્યા છે જેનો ઉકેલ ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા દ્વારા જ મળી શકે છે. કાર્યક્રમમાં મુખ્ય મહેમાન તરીકે ગુજરાત યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. નીરજા અરુણ ગુપ્તાએ જણાવ્યું હતું કે ભારતીય જ્ઞાને આપણા સમાજને સાચવ્યો છે, અખંડ સંસ્કૃતિનું જતન કરવાનું શક્ય બનાવ્યું છે. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા એ આત્મ-પરિચયની યાત્રા છે. દરેક વિષય IKS (ભારતીય નોલેજ સિસ્ટમ) સાથે જોડાયેલો છે. દરેક વિષયના પ્રારંભિક અભ્યાસમાં ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાના એક ભાગનો સમાવેશ કરવો મહત્વપૂર્ણ છે. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાની

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

માન્યતા માટે આપણે પશ્ચિમી દેશો પાસેથી ઉધાર લેવાની જરૂર નથી. આપણા જ્ઞાનનો સ્ત્રોત આપણા અસ્તિત્વનો પુરાવો છે. આ પ્રસંગે વિશેષ સંબોધન કરતાં સામાજિક ચિંતક અશ્વિની શર્માએ જણાવ્યું હતું કે ભારત માનવજાતની જન્મભૂમિ છે. થોડા વર્ષો પહેલા સુધી રામ મંદિરનું નિર્માણ માત્ર એક કલ્પના હતી, પરંતુ હવે રામ મંદિરનું પ્રતીક મળવું એ દેશમાં થઈ રહેલા પરિવર્તનનું મોટું પરિણામ છે. રામ મંદિર રાષ્ટ્રીય મંદિર તરીકે વિકસિત ભારતનો માર્ગ મોકળો કરશે. કાર્યક્રમના અતિથિ તરીકે સોમનાથ સંસ્કૃત યુનિવર્સિટીના વાઈસ ચાન્સેલર પ્રો. સુકાંતકુમાર સેનાપતિએ જણાવ્યું હતું કે, ભારતની ભૂમિ એ ઋષિમુનિઓની તપસ્યાનો મહિમા છે, જે ભારતીયોનો માર્ગ છે. આ માર્ગે ભારત વિશ્વમાં અગ્રેસર બન્યું છે. કાર્યક્રમમાં મુખ્ય વક્તવ્ય રજૂ કરતાં શિક્ષણ મંત્રાલયના IKS વિભાગના રાષ્ટ્રીય સંયોજક પ્રો. ગંતિ એસ મૂર્તિએ ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાના વૈશ્વિક પરિપ્રેક્ષ્ય વિશે વાત કરી. તેમણે કહ્યું કે તમામ પરંપરાઓમાં વ્યવસ્થા સરખી છે પરંતુ દ્રષ્ટિ અલગ છે. ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાનો દૃષ્ટિકોણ વ્યાપક અને વિસ્તૃત છે, જેનો મૂળ ઉદ્દેશ્ય જન કલ્યાણ છે. આ ભાવનામાં જ ભારતીય જ્ઞાન પરંપરા વૈશ્વિક કલ્યાણ માટે કામ કરી રહી છે.

ભારત આધ્યાત્મિક સંસ્કૃતિનું પ્રતિક છે

કાર્યક્રમના અધ્યક્ષસ્થાને ગુજરાત સેન્ટ્રલ યુનિવર્સિટીના કુલપતિ પ્રો. રમાશંકર દુબેએ કહ્યું કે ભારતીય રાષ્ટ્રની સંસ્કૃતિ આધ્યાત્મિક છે, જેમાં ભૌતિકવાદ સાથે આધ્યાત્મિકતાનો અદ્ભૂત સમન્વય જોવા મળે છે. તેમણે કહ્યું કે પશ્ચિમી સંસ્કૃતિમાં ગુરુની જવાબદારી માત્ર જ્ઞાન આપવા સુધી જ સીમિત છે, ભારતીય સંસ્કૃતિમાં વિદ્યાર્થીના શરીર, મન, બુદ્ધિ અને આત્માના વિકાસની ખાતરી કરવાની છે. માણસના સર્વાંગી

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

વિકાસ પર ભાર મૂકતા તેમણે કહ્યું કે ભારતીય દ્રષ્ટિ આપણને માત્ર માનવ શરીર તરીકે જ નહીં પરંતુ એક અભિન્ન ચેતના તરીકે જુએ છે.

કાર્યક્રમની શરૂઆત દીપ પ્રાગટ્યથી કરવામાં આવી હતી. આ દરમિયાન કાર્યક્રમના સંયોજક પ્રો. અતનુ મોહાપાત્રાએ કહ્યું કે કોન્ફરન્સનો ઉદ્દેશ્ય ભારતીય જ્ઞાન પરંપરાના સમૃદ્ધ જ્ઞાનનો સતત પ્રસાર કરવાનો છે, જેથી આપણે આપણી વિશાળ અને સમૃદ્ધ સંસ્કૃતિ પર ગર્વ અનુભવી શકીએ. યુનિવર્સિટીના રજીસ્ટ્રાર પ્રો. એચ.બી.પટેલે ઉપસ્થિત તમામ મહેમાનોનું સ્વાગત કર્યું હતું. ઉલ્લેખનીય છે કે આ કાર્યક્રમમાં દેશના વિવિધ પ્રદેશોના 300 થી વધુ સંશોધકો, શિક્ષકો અને વિદ્વાનોએ ભાગ લીધો હતો. પ્રો.અતનુ મોહાપાત્રાના જણાવ્યા અનુસાર આ ત્રણ દિવસીય કોન્ફરન્સમાં કુલ 24 ટેકનિકલ અને 4 પ્લેનરી સેશન હશે.

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

(भारत की संसद के अधिनियम सं. 25, 2009 के तहत स्थापित)

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

(Established by an Act of Parliament of India, No 25 of 2009)

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

सेक्टर-29, गांधीनगर-382030,फोन नं.- 07923977407,फेक्स-07923260076

Sector-29, Gandhinagar, Phone No.8963840032, Fax-07923260076

Email: pro@cug.ac.in.in,website: www.cug.ac.in

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
जनसंपर्क अधिकारी

By Speed Post/By Email/By Hand

With regards,
Your Truly,

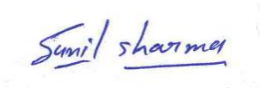

Dr. Sunil Kumar Sharma
Public Relations Officer
Central University of Gujarat,
Sector-29, Gandhinagar,
Gujarat, India-382030
+91 8963840032
Email Id – pro@cug.ac.in
Web www.cug.ac.in

Don't print unless it's necessary.... Let's save environment.